नियत और अमल

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
हिन्दी रूपः डॉ आरिफ़ अब्बास

किसी अमल के अच्छे और बुरे होने में नियत को बड़ा दख़ल हुआ करता है। कोई अमल देखने में कितना ही अच्छा मालूम होता हो लेकिन अगर उसे अंजाम देने वाले की नियत बुरी है तो वह अमल भी बुरा समझा जाएगा और कोई अक़्लमंद उसकी तारीफ़ नहीं कर सकता इसी तरह अगर अच्छी नियत के साथ कोई काम किया जाए तो काम चाहे बुरा ही क्यों न हो लेकिन लोग उसे करने वाले की बुराई नहीं करते क्योंकि उसकी नियत ख़राब न थी।

मिसाल के तौर पर कोई ख़ैरात करे और नियत ये हो कि उससे जुर्म करने वाले लोगों को मदद मिले और वह ज़्यादा आसानी के साथ जुर्म करें या ये भी न सही तो सिर्फ़ इस ग़रज़ से ख़ैरात दी जाए कि लोग ऐसे शख़्स की तारीफ़ करें और उसकी ख़ूब नुमाइश और शोहरत हो यानी इस काम में जो जज़्बा काम कर रहा हो वह किसी की मदद और उस से हमदर्दी का नहीं बल्कि अपने ज़ाती नाम और शोहरत का हो तो ऐसे अमल की हरगिज़ तारीफ़ नहीं की जा सकती इसी तरह अगर किसी शख़्स ने इंतेहाई ख़ूलूस और पूरी हमदर्दी के साथ किसी गिरते हुए आदमी को संभालने की भरपूर कोशिश की मगर उससे फ़ाएदे के बजाए नुक़सान पहुँच गया तो ऐसे मदद करने वाले शख़्स की कोई बुराई नहीं कर सकता जिसने पूरी सच्ची नियत के साथ उसको बचाने की कोशिश की थी। सिर्फ़ इसलिए कि उसकी नियत नेकी की थी। क़ुरआने हकीम में जगह-जगह नियत के साथ नेक अमल पर ज़ोर दिया गया है। आईये! क़ुरआन पाक के शुरु में देखें हमें अल्लाह का ये इरशाद बड़ी वज़ाहत के साथ मिलता है, तर्जुमाः- ''इस किताब यानी क़ुरआने हकीम में कोई शक और शुब्हा नहीं है। बेशक ये परहेज़गार लोगों के लिए हिदायत है जो ग़ैब पर ईमान रखते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं।'' जिसका मतलब ये है कि वह नमाज़ को पाबन्दी के साथ अदा करते हैं फिर इरशाद हुआ कि ''वह लोग ऐसे हैं कि जो कुछ हम ने उन्हें रोज़ी दी है उसको भी वह अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर देते हैं वह लोग ऐसे हैं जो उन तमाम चीज़ों पर ईमान रखते हैं (जो ऐ रसूल[स०]) तुम पर नाज़िल की गई हैं और उन चीज़ों पर भी जो तुमसे पहले नाज़िल की गई थीं और वह हिसाब के दिन पर भी पूरा-पूरा यक़ीन रखते हैं ऐसे ही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।'' (सूरए बक़रा)

आयतों के इस तर्जुमे से ये बात पूरी वज़ाहत से हमारे सामने आ जाती है कि इस्लाम का नज़रिया ये है कि नियत के साथ अमल और अमल के साथ नियत भी ज़रूरी है। ये और बात है कि किसी बड़ी रुकावट की वजह से किसी वक़्त अमल का वुजूद न हो सके लेकिन अमल का जज़्बा, अमल का इरादा और अमल के लिए भरपूर मुस्तएदी का होना हर हाल में ज़रूरी है।

क़ुरआन और हदीस में इस बात के सुबूत में बहुत से वाक़िआत और बातें मिलेंगी जहाँ नियत का वुजूद है मगर अमल का वुजूद नहीं है लेकिन कहीं पर ये न मिलेगा कि जज़्ब-ए-अमल और अज़्मे अमल भी मौजूद न हो।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पूरे वाक़िआत को देख लीजिए हर जगह सिर्फ़ उनके इल्मो मारेफ़त ही का ज़िक्र मिलेगा और किसी जगह भी इसका तज़किरा नहीं किया गया कि उन्होंने किस-किस तरह इबादत की थी मगर मन्सबे नुबुव्व्त उन्हीं को मिला इसलिए कि उनमें इल्म की ज़्यादती के साथ अमल का इरादा भी था और

वह इस बात के लिए पूरी तरह मुस्तएद और तैयार थे कि जब और जो कुछ भी अल्लाह का हुक्म होगा फ़ौरन वह उस पर अमल करेंगे। ज़ाहिर सी बात है कि एक सच्चा मुसलमान और पक्का मोमिन दिन और रात के हर लम्हे में तो नेक अमल में मशग़ूल नहीं रहता और रह भी नहीं सकता वह कभी सो जाता है तो कभी बेकार बैठा रहता है मगर अमल का इरादा उस से कभी अलग नहीं होता। हमारे सामने इस बात की भी मिसालें मौजूद हैं जहाँ अमल का वुजूद बिल्कुल ही नहीं हो सका और सिर्फ़ मुस्तएदी और अमल का इरादा ही था मगर अल्लाह की बारगाह में सिर्फ़ नियत को जबकि वह अमल के इरादे के साथ जुड़ गई थी क़ुबूलियत का दर्जा अता फ़रमा दिया गया। मुस्नद अहमद और हदीस की दूसरी किताबों में मौजूद है कि ओहद की जंग में अम्र बिन साबित बिन वक़्श इस्लाम लाने के बाद फ़ौरन काफ़िरों के लश्कर से लड़े और शहीद हो गए जबकि उन्होंने एक सज्दा भी उस वक़्त तक नहीं किया था। और हुज़ूरे अनवर[स॰] ने उनकी शहादत की ख़बर सुनकर फ़रमाया कि अम्र बिन साबित शहीद हैं और जन्नत वालों में से हैं। सरवरे काएनात ने एक हदीस में फ़रमाया कि ''हर शख़्स के अमल की हैसियत उसके इरादे और नियत से जुड़ी होती है।'' दूसरी हदीस में है ''अमल के मेयार का तअय्युन नियतों के मुताबिक़ हुआ करता है।''

इसी नुक़्त-ए-नज़र की तरफ़ रसूल[स॰] की इस हदीस में भी खुले तौर पर इशारा मौजूद हैः ''अगर शरई हाकिम किसी हुक्म देने में पूरी तहक़ीक़ व इज्तेहाद से काम ले और इसके नतीजे में सही और ठीक फ़ैसले तक पहुँच जाए तो उसके लिए अल्लाह के रास्ते में दुगना सवाब मिलेगा लेकिन अगर उस हाकिम व मुजतहिद को बहुत कोशिश के बाद और मुख़लिसाना कोशिश के बाद ठीक फैसले तक न पहुँच सके बल्कि ऐसे फ़ैसले तक पहुँच हासिल हो जो उसकी नज़र में तो सही हो मगर हक़ीक़त में ग़लत हो जब भी उस मुजतहिद व हाकिम को कम से कम एक अज्र ज़रूर मिलेगा क्योंकि फ़ैसला चाहे हक़ीक़त और असलियत में गलत ही क्यों न हो मगर उसने सच्ची नियत और सच्चाई के साथ कोशिश तो ज़रूर की है। ग़रज़ अमल की हैसियत की पहचान का इन्हेसार नियत पर है और नियत की अहमियत और वज़न, अमल या जज़्ब-ए-अमल से जुड़ा है जिसका खुलासा ये हुआ कि वह अमल जो बिना इरादे और बग़ैर नियत के हो कोई भी क़ीमत नहीं रखता, और वह नियत जो अमल के साथ जज़्बे और इरादे की हद तक भी जुड़ी न हो, कोई भी हैसियत और अहमियत नहीं रखती।

जज़ा और सज़ा का ताल्लुक़ उन ही आमाल से है जिनमें नियत और इरादा शामिल हो या उन नियतों से है जिनमें कम से कम इरादे और जज़्बे की हद तक भी अमली रुख़ पाया जाता हो। रोज़े में अगर पानी पीने का एक क़हरी और अचानक ख़याल आ जाए जबकि न तो पीने का इरादा ही हो और न पिया ही जाए तो न यह ख़याल गुनाह है और न इस से रोज़ा टूट सकता है लेकिन अगर इस ख़याल और तसव्वुर को नियत और इरादे की हैसियत भी हासिल हो जाए और रोज़ेदार ये तै कर ले कि अब मैंने रोज़ा ख़त्म कर दिया और बस खाना पानी इस्तेमाल करना अनक़रीब शुरु कर दूँगा तो उसका रोज़ा बाक़ी नहीं रह सकता चाहे कुछ न खाए और कुछ न पिये। इसी तरह अगर कोई ज़िंदगी भर नमाज़ें पढ़ता रहे और नियत न हो कि वह नमाज़ पढ़ता है बल्कि उसकी नियत हो कि वह एक क़िस्म की वर्ज़िश कर रहा है तो ऐसी नमाज़ क़तई तौर पर बेकार है और वह हरगिज़ इस्लामी नमाज़ न होगी।

इसी तरह अगर कोई ग़ैर मुस्लिम यानी मुशिरक और काफ़िर सिर्फ़ क़ुरआनी आयतें और उनके मतलब मालूम कर ले या उनकी अपने ख़याल में रद् करने के लिए, क़ुरआन पाक को पढ़ने लगे तो ज़ाहिर है कि इस क़िराअत का सवाब से कोई जोड़ ही नहीं हो सकता बल्कि सवाब उस मुसलमान को मिलगा जो उसे अल्लाह का कलाम समझ कर पढ़ेगा। इसी नुक़्त-ए-नज़र पर जब हम क़ुरआन और हदीस का ग़ौर से मुताला करेंगे तो हमें हर जगह नियत और अमल से वाबस्तगी मिलेगी। और हक़ीक़त तो ये है कि ख़ुद नियत के मतलब ही में अमल का पहलू शामिल होता है इस तरह अगर किसी बात के ख़याल में अमल या जज़्ब-ए-अमल का

सिरे ही से वुजूद न हो तो वह ख़याल किसी हैसियत से भी नियत नहीं कहा जा सकता। अल्लामा अबूजाफ़र तूसी ने इस बात को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया हैः यानी नियत से मुराद है किसी काम के करने का इरादा, और ये इरादा इल्म और अमल के दरमियान एक वास्ते की हैसियत रखता है इसलिए कि जब तक कोई बात इल्म में न आएगी उस वक़्त तक उसको अमल में लाने का इरादा यानी नियत मुमकिन ही नहीं हो सकता। इसका नतीजा ये निकलता है कि नियत सिर्फ़ ख़याल और तसव्वुर का नाम नहीं है बल्कि उस ख़याल का नाम है जिसके साथ इरादा भी हो चाहे वह इरादा अमल की सूरत इख़्तियार कर सके या सिर्फ़ सच्चाई के जज़्बे तक ही महदूद रहे।

आईये हम एक बार फ़िर क़ुरआनी आयतों पर नज़र डालें सूर-ए-हुजरात में अल्लाह का इरशाद हैः तर्जुमाः यक़ीनन सच्चे मोमिन वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आए और उस ईमान के बाद उनके दिलों में कभी शक और शुब्हा नहीं पैदा हुआ और साथ ही उन्होंने अपने माल व जान के साथ अल्लाह के रास्ते में जेहाद किया। यही लोग सादिक़ीन यानी सच्चे ईमानदार हैं।'' देखिये यहाँ भी ईमान की एक शर्त नफ़्स और माल के जेहाद को क़रार दिया गया है। इस जगह पर ये बात साफ़ रहे कि इस जेहाद से सिर्फ़ जंग के मैदान की लड़ाई मुराद नहीं है बल्कि इस से ख़ुदा के अहकाम पर अमल करने की हर वह कोशिश मुराद है जिसका ताल्लुक़ मुस्लिम मर्द की ज़िंदगी के किसी रुख़ या किसी मैदान से क्यों न हो, एक दूसरी आयत सूर-ए-निसाः 124 में है, तर्जुमाः ''और जो कोई नेक आमाल करेगा चाहे मर्द हो या औरत हो जबकि वह मोमिन भी हो तो ऐसे सब लोग जन्नत में दाख़िल होंगे।'' यहाँ जन्नत में दाख़िल होने की शर्त ईमान है और ईमान व नेक अमल दोनों एक-दूसरे से जुड़े हैं। यानी नेक अमल ईमान से पूरा होगा और ख़ुद ईमान फ़ायदेमंद और असरदार सिर्फ़ उसी वक़्त होगा जबकि उसके साथ नेक अमल या नेक अमल का जज़्बा और ताक़त मौजूद हो। इस सिलसिले में एक वाक़िए के ज़िक्र से इस बात की और वज़ाहत होगी, ख़ंदक़ की जंग में जब शेरे ख़ुदा अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ०] अम्र बिन अब्देवुद से सीने पर आए और चाहा कि उसका सर अलग कर दें। ठीक उसी वक़्त उसने आपकी मुबारक शान में बहुत ही गंदे अलफ़ाज़ कहे और आपकी तरफ़ थूक कर बेअदबी भी की। सरवरे काएनात और अस्हाबे केराम दूरे से ये सब कुछ देख रहे थे। हज़रत अमीरुलमोमिनीन[अ०] ने उसको फ़ौरन छोड़ दिया और उसके सीने से उतार आए और थोड़ी देर के बाद फिर उसके पास जाकर उसके सर को जुदा कर दिया। वापसी पर जब हुज़ूर[स०] ने आपसे पूछा कि पहली बार तुम ने अली[अ०] उसे क्यों छोड़ दिया था तो आपने अर्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल[स०] उसके बेअदबी से मुझे गुस्सा आ गया था। अगर मैं उस वक़्त उसे क़त्ल करता तो मेरी नियत बदले की होती और ये क़त्ल अल्लाह के लिए न होता इसलिए मैंने सब्र से काम लिया ताकि मेरा ये अमल सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो और मेरी नियत में कोई दूसरा जज़्बा न आने पाए।